

## सरसों की फसल उत्पादन में कीट प्रबंधन

नीरज कुमार<sup>1\*</sup>, हिमांशु रंजन<sup>1</sup>, पारस कंबोज<sup>1</sup> और मोहित कुमार<sup>2</sup>  
<sup>1</sup>शोध छात्र, शस्य विज्ञान विभाग, आर. एस. एम. पी.जी. कालेज, धामपुर, बिजनौर  
<sup>2</sup>उद्यान विज्ञान विभाग, आर एस. एम. पी.जी. कालेज, धामपुर, बिजनौर  
 \*E-mail: neerajkumar32598@gmail.com

सरसों (ब्रेसिका प्रजाति) भारत की महत्वपूर्ण तिलहनी फसल है। इसे रबी मौसम की फसल के रूप में उगाया जाता है। सरसों का उपयोग मुख्य रूप से खाद्य तेल के रूप में किया जाता है। इसके अतिरिक्त पत्तियों को हरी सब्जी के रूप में भी उपयोग किया जाता है। इसका तेल खाद्य उपयोग के अलावा औद्योगिक उत्पादों, सौंदर्य प्रसाधनों और आयुर्वेदिक औषधियों में भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। हमारे देश में उगाई जाने वाली तिलहनी फसलों में राई-सरसों का मूंगफली के बाद दूसरा स्थान है। खाने के तेल की वर्तमान उपलब्धता (8.5 किग्रा./व्यक्ति/वर्ष) के आधार पर वर्ष 2020 तक हमारे देश में लगभग 340 लाख टन वनस्पति तेल की आवश्यकता होगी, इस समय कुल खाद्य तेल उत्पादन का लगभग एक तिहाई तेल राई-सरसों द्वारा प्राप्त होता है इसकी खेती हमारे देश में लगभग 62.3 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल में की जाती है, जिससे लगभग 59 लाख टन उत्पादन होता है। लेकिन इसकी औसत पैदावार विश्व की औसत पैदावार की तुलना में काफी कम है सिंचित क्षेत्रों में राई-सरसों के उत्पादन को बढ़ाने में आने वाली कठिनाईयों में सबसे महत्वपूर्ण हैं। भारत में तिलहन उत्पादन क्षेत्र का लगभग 25-30% भाग इसमें आता है। जिसमें राजस्थान, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, मध्य प्रदेश और पश्चिम बंगाल प्रमुख हैं। खाद्य तेल उत्पादन में सरसों का महत्वपूर्ण योगदान है। यह किसानों के लिए एक नकदी फसल के रूप में भी काम करती है। सरसों की फसल पर विभिन्न प्रकार के कीटों का आक्रमण होता है, जो उत्पादन को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकते हैं। इसलिए कीट प्रबंधन तकनीकों का सही और समय पर उपयोग अत्यंत आवश्यक है।

### सरसों के प्रमुख कीट एवं उनकी पहचान

- लाही कीट:** लाही कीट सरसों का प्रमुख कीट है जिसके आक्रमण से सरसों की फसल में 70 से 80% तक छ्दाती होती है कीट का आक्रमण आमतौर से मध्य दिसंबर के बाद शुरू होता है। छोटे, हरे रंग के कीट जो



पत्तियों, तनों और फलियों से रस चूसते हैं और पत्तियां मुरझा जाती हैं जिससे फसल की वृद्धि रुक जाती है। परंतु इनकी संख्या जनवरी-फरवरी में काफी बढ़ जाती है।

#### प्रबंधन:

- खेत में नीम के तेल (2%) का छिड़काव करें।
  - थायोमिथोक्सम 0.03% या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 SL का छिड़काव करें।
- आरा मक्खी:** इस मक्खी का धड़ नारंगी रंग का होता है। इसका सिर व पैर काले होते हैं। सुंडियों का रंग गहरा हरा होता है। जिनके ऊपरी भाग पर काले धब्बों की तीन कतारें होती हैं। इस कीड़े की सुंडियां फसल को उगते ही पत्तों को काट-काट कर खा जाती है। इसका अधिक प्रकोप अक्टूबर-नवम्बर में होता है।



#### प्रबंधन:

- गर्मियों की गहरी जुताई करें व सिंचाई करने पर भी इसका प्रकोप कम हो जाता है। इस कीट की रोकथाम हेतु मेलाथियान 50 ई.सी. 1 लीटर को 500 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर में छिड़काव करें। आवश्यकता पड़ने पर दुबारा छिड़काव करें।
- बिहार बालदार कैटरपिलर:** युवा लार्वा ज्यादातर पत्तियों की निचली सतह पर झुंड में भोजन करते हैं। कैटरपिलर पत्तियों को खाते हैं और गंभीर संक्रमण होने पर पूरी



फसल नष्ट हो जाती है।

**प्रबंधन :**

- बिहार हेयरी कैटरपिलर का प्रकोप प्रारंभ होने पर किसानों को सलाह है कि प्रारम्भिक अवस्था में झुण्ड में रहने वाली इन इल्लियों को पौधे सहित खेत से निष्कासित करें एवं इसके नियंत्रण हेतु फसल पर लैम्बडा सायहेलोथ्रिन 04.90 सी.एस. (300 मि ली/हे) या इंडोक्साकार्ब 15.8एस.सी. (333 मि ली/हे) का छिड़काव करें।
- 4. **चितकबरा कीट:** सरसों की फसल को नुकसान पहुंचाने वाला प्रमुख कीट है। इसे धोलिया कीट भी कहा जाता है। यह कीट पौधों के रस को चूसता है, जिससे पौधों की पत्तियों पर सफेद धब्बे पड़ जाते हैं। ज्यादा आक्रमण होने पर पौधा सूख जाता है।



**प्रबंधन :**

- फसल उगने के समय 200 मिलीलीटर मैलाथियान (सायथियान, मैलामार, मैल्टाफ़) 50 ईसी को 200 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ छिड़काव करें।
- 5. **लीफ़ माइनर:** पत्तियों के अंदर भोजन करने वाले कीटों का समूह है। ये कीट पत्तियों में सुरंग बनाते हैं, जिससे पौधों को नुकसान होता है। लीफ़ माइनर कई तरह के कीटों से बनते हैं, जैसे कि मक्खियां, पतंगे, और भृंग।



**प्रबंधन :**

- लार्वा को मारने के लिए इस जैविक विधि का उपयोग करें। जैसे : नीम तेल के उपयोग निर्देशों के अनुसार प्रभावित पत्तियों पर स्प्रे करें।

## एकीकृत कीट प्रबंधन रणनीति

1. **कर्षण क्रियाओ द्वारा उपाय:** गहरी जुताई करें ताकि कीटों के अंडे और शिशु धूप में नष्ट हो जाएं। उचित समय पर बुवाई करें। सहफसल (मूली, मैथी) की बुवाई करें ताकि कीट का दबाव कम हो।
2. **यांत्रिक उपाय:** पीले चिपचिपे फंदों का उपयोग करें। कीट प्रभावित हिस्सों को तोड़कर नष्ट करें।
3. **जैविक उपाय:** ट्राइकोग्राम्मा जैसे परजीवी कीटों का उपयोग करें। नीम तेल (2%) का छिड़काव करें।
4. **रासायनिक उपाय:** कीटनाशकों का सही मात्रा में और अनुशासित समय पर उपयोग करें। एक ही कीटनाशक का बार-बार प्रयोग न करें।

